# संवाद

सीखने की प्रक्रिया में यह एक महत्वपूर्ण बिंदु है कि शिक्षक अपनी कक्षायी प्रक्रियाओं को किस तरह से संयोजित करते हैं और बच्चों को समग्रता में विभिन्न अवसर उपलब्ध कराते हैं। सीखने से जुड़ी समस्त अवधारणाएँ इस ओर संकेत करती हैं कि परिवार, विद्यालय, समुदाय, नीतियाँ और स्वयं शिक्षकों की शिक्षा किस रूप में आकार लेती हैं। 'समग्र शिक्षा' की संकल्पना में इन्हीं बिंदुओं को ध्यान में रखा गया है। कुशल पाठक के रूप में पढ़ने का हुनर अन्य विषयों के अध्ययन को प्रभावित करता है। अत: यह आवश्यक है कि बच्चों में पढ़कर समझने की कुशलता का विकास किया जाए। पढ़ने का संबंध विभिन्न प्रकार की उप कुशलताओं के साथ भी है, जिन्हें विकसित करने के लिए बाल साहित्य सहित विभिन्न प्रकार की पाठ्य सामग्री की उपलब्धता एक अनिवार्य आवश्यकता है।

बच्चों का स्कूली जीवन उनके विकास के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है। इन वर्षों में बच्चों के विकास के लिए अनुकूल वातावरण मिलना आवश्यक है। दुर्भाग्यवश हमारे देश में गरीबी और पिछड़ेपन के कारण अधिकांश बच्चों को घरों में एक उद्दीपित वातावरण नहीं मिल पाता। शिक्षा का अधिकार अधिनियम इस अभाव की पूर्ति के संदर्भ में एक प्रमुख प्रयास है। हालाँकि शिक्षा के क्षेत्र में अभी भी बहुत सुधार लाने की आवश्यकता है। शिक्षा क्रम को प्रभावपूर्ण ढंग से क्रियान्वित करने के लिए आवश्यक है कि पर्याप्त समय, स्टॉफ़, भवन तथा उसका रख-रखाव, निधियाँ, शैक्षिक सामग्री, खेल के मैदान आदि अनिवार्य रूप से उपलब्ध हों, परंतु दुर्भाग्यवश अधिकतर स्कूलों में ये न्यूनतम आवश्यकताएँ भी उपलब्ध नहीं हैं। लगन और प्रतिबद्धता की भावना से कार्य करने वाले शिक्षकों की संख्या भी कम हो रही है। ज़्यादातर शिक्षकों द्वारा अपनाए जाने वाले शिक्षण के तरीके छात्रों के लिए किसी प्रकार की चुनौती प्रस्तुत नहीं करते। अब ज़रूरत है शिक्षा में टेक्नोलॉजी के प्रयोग की। एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा ई-कंटेंट तैयार किया जा रहा है जो NROER पर शिक्षक देख सकते हैं और शिक्षा में उसका प्रयोग कर सकते हैं। एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा निर्मित किताबें ई-पाठशाला में उपलब्ध हैं, जिन्हें मुफ़्त डाउनलोड किया जा सकता है और 'स्वयं प्रभा' पर शैक्षिक चर्चाओं का लाभ उठाया जा सकता है।

उम्मीद है यह अंक आपको पसंद आएगा। इस अंक से संबंधित यदि कोई सुझाव हों तो आप हमें भेज सकते हैं।

*अकादमिक संपादक*